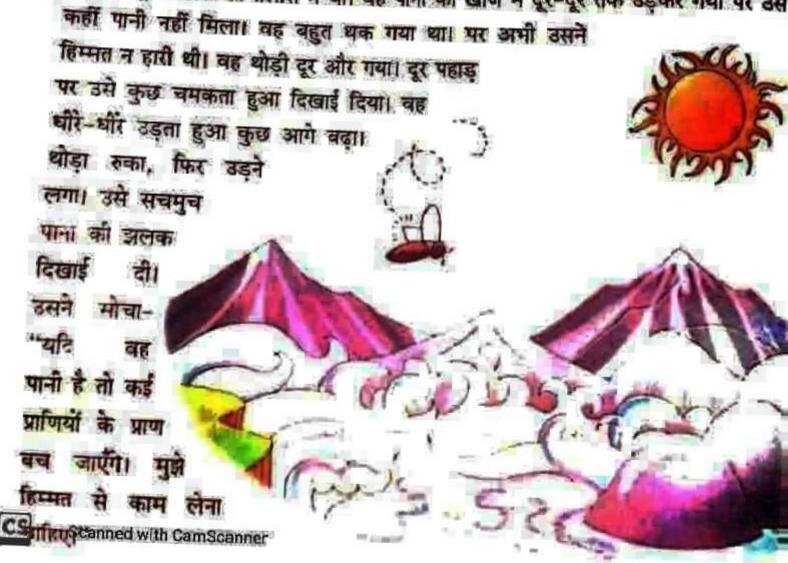
PUBLIC SCHOOL DARBHANGA

जुगन् का प्रकाश

एक वार बहुत समय तक कहीं वर्षा न हुई। कुएँ-तालाव सब सूख गए। धीरे-धीरे नदियाँ भी सूख गई। सारो धरती सूख गई। उसमें जगह-जगह दरारें पड़ गई।

पानी न था तो अन्त कहाँ से पैदा होता! अन्त तो अन्त, कहीं घास का एक सूखा तिनका भी नज़र नहीं आता था। हवा चलती तो घूल उड़ती। पेड़ों की सूखी डालियाँ चर्र-मर्र करती हुई टूटकर घरती पर आ गिरतीं। भूख-प्यास के मारे सभी बेहाल थे। कहीं भी पानी की एक बूँद न थी। पशु-पक्षियों का हाल तो और भी बुरा था। कई तड़प-तड़प कर प्राण दे चुके थे।

एक जुगनू भी पानी की तलाश में था। वह पानी की खोज में दूर-दूर तक उड़कर गया पर उसे कहीं पानी नहीं मिला। वह बहुत शक गया था। यह अभी उपने



बह होटा-सा जुगनू पहाड़ के उस पार उड़ता चला गया। वह पानी ही था जो दूर से चमक रहा बा। ठंडा और मीठा पानी, झर-झर की मधुर ध्वनि करता हुआ वह रहा था। जुगनू ने पेटमर पानी पिया। फिर रुककर थोड़ा और पिया। जब तृप्ति हो गई तो वहीं लेट गया। उसे नींद नहीं आई। उसने सोचा-"कई जीव-जंतु पानी के बिना तड़प रहे हैं। यदि मैं सो गया तो उनकः क्या होगा।

जुगनू उड़ने लगा। रास्ते में छोटा-बड़ा जो भी मिलता, उसे पानी का पता बताता और फिर आगे उड़ जाता। इसी तरह अन्य जीवों को पानी दिखाते-दिखाते संघ्या हो गई और फिर रात का अंधकार बढ़ने लगा। दूर से चमकता हुआ पानी दिखाई देना बंद हो गया। जुगनू जीव-जंतुओं के साथ जाता, उन्हें पानी दिखाता और लौट आता। सारी रात उड़ते-उड़ते वह इतना थक गया कि प्रभात होते ही एक पत्थर पर गिर पड़ा।

